हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
कोनिफर कैम्पस, पंथघाटी,शिमला -171013, हिमाचल प्रदेश

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा 5 जून 2021 को विश्व पर्यावरण दिवस के आयोजन की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 5 जून 2021 को **विश्व पर्यावरण दिवस** मनाया गया, जिसमें संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, संस्थान के शोध केन्द्रों में तैनात कर्मचारियों तथा शोधार्थियों, अन्य संस्थानों व विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों के बच्चों सहित लगभग 60 से अधिक लोगों ने आभासीय मंच "Zoom App" के माध्यम से भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए **श्री जगदीश सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' एवं प्रभागाध्यक्ष**, विस्तार प्रभाग ने संस्थान के निदेशक, आमंत्रित अतिथि प्रोफेसर (डॉ॰) डी॰ आर॰ भारद्वाज, डॉ॰ यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी सोलन समेत सभी वक्ताओं व प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रुप-रेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस की नींव 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में रखी गई। 1974 में पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। दुनिया में हर वर्ष की तरह इस बार भी 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है। पर्यावरण के प्रति बढ़ते खतरों को रोकने और इसे सुरक्षित करने के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए यह दिन मनाया जाता है। पर्यावरण सुधारने और इसे बिगाड़ने के लिए मानव जिम्मेदार है। ऐसे में हमें पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए **डॉ. एस. एस. सामंत, निदेशक**, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि पर्यावरण के बिना मानव का अस्तित्व असंभव है। डॉ. सामंत ने "**इकोसिस्टम रिस्टोरेशन',** पर अपनी प्रस्तुति दी। सर्व प्रथम उन्होंने संस्थान द्वारा इको रिस्टोरेशन पर किए गए कार्यों की जानकारी सांझा करी। उन्होंने बताया कि जैव-विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विविधता एवं विभिन्नता है जो कि प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और उनकी पारितंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है। उन्होंने बताया कि हिमालयन क्षेत्र जैव विविधता का भंडार है और यहाँ 18940 पौधों की प्रजातियाँ हैं, जिसमें से 1748 औषधीय पौधों की, 675 जंगली खाद्य पौधों की, 155 पवित्र प्रजातियाँ, इत्यादि की हैं। इसके अलावा तीस हज़ार से ज्यादा वन्य जीवों और जानवरों की प्रजातियाँ हैं। उन्होंने हिमालय में पाई जाने वाली जैव-विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। डॉ. सामंत ने कहा कि जैव-विविधता, जैव-विविधता का स्तर, मूल्य, पारिस्थिकी तंत्र सेवाएँ, जैव-विविधता के ह्रास के कारण, जलवायु परिवर्तन का जैव-विविधता पर असर, सतत उपयोग एवं सरंक्षण विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों की जैव-विविधता के सरंक्षण के बारे में ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि परिस्थितकी तंत्र मानव कल्याण के लिए विभिन्न सेवाएँ प्रदान करता है। हिमालयी क्षेत्र में पाये जाने वाले अकाष्ठ वनोपज़ जैसे कि औषधीय पौधे, जंगली खाद्य फल, इत्यादि लोगों के आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेह बेरी के बहुपयोग के बारे में

भी विस्तृत जानकारी दी गई। पारिस्थिकी तंत्र के क्षरण में जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, वन कटाव, जंगली आग, बिजली प्रोजेक्ट्स, एलियन प्रजातियाँ, अत्यधिक पर्यटन मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। अतः इस पर गहन विचार विमर्श और कार्य करने की आवश्यकता हैं। डॉ॰ सामंत ने कहा कि तापमान वृद्धि के कारण सेब की फसल लाहौल स्पिती और किन्नौर के पूह विकास खंड में उगानी शुरू कर दी है तथा पैदावार देनी शुरू हो गई हैं। इसके अलावा जंगली पेड़ जैसे कि जूनीपर, चिलगोजा, कैल आदि प्रजातियाँ अधिक ऊंचाई की ओर बढ़ने लगी हैं। उन्होंने जैव विविधता के सरंक्षण हेतु वन विभाग के साथ साथ स्थानीय लोगों के भागीदारी पर ज़ोर दिया।

प्रोफेसर (डॉ॰) डी॰ आर॰ भारद्वाज, डॉ॰ यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी सोलन ने '**हिमाचल प्रदेश में इको रिस्टोरेशन – आवासों के पुनरुधार की दिशा में एक कदम**' पर अपनी प्रस्तुति दी तथा बताया कि वर्तमान समय में इको-रिस्टोरेशन के द्वारा हिमाचल के वनों में स्थित जीव आवासों के पुनरुधार किया जा सकता है। डॉ॰ भारद्वाज ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने 2020-2030 दशक को इको-रिस्टोरेशन दशक के रूप में घोषित किया हैं। संयुक्त राष्ट्र का यह कार्यक्रम मानव कल्याण के लिए बहुत बड़ा कार्यक्रम सिद्ध होगा। इसका उद्धेश्य अगले दस वर्षों में प्रतिवर्ष एक अरब पेड़ लगाने का लक्ष्य है ताकि पर्यावरण एवं परिस्थितिकी क्षरण को रोका जा सके और परिस्थितिकी तंत्र में सुधार लाया जा सके। उन्होंने विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों को विस्तार से समझाया तथा उनकी समस्याओं और उनके निदान के बारे में भी बताया। इसके अलावा विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों के कार्बन पृथक्करण क्षमता पर भी प्रकाश डाला। डॉ॰ भारद्वाज ने कहा कि बांस की बिभिन्न प्रजातियाँ इको-रिस्टोरेशन में प्रभावी हैं। उन्होंने आगे बताया कि कृषि-वानिकी प्रणाली (agroforestry system) अपना कर भी 1 अरब से अधिक जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करी जा सकती हैं। उन्होंने विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया।

डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक 'जी' एवं समूह समन्वयक अनुसंधान, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने '**बेहतर उत्तरजीविता और उत्पादकता वृद्धि के लिए वृक्षारोपण की तकनीकों**' पर प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक वृक्षारोपण की तकनीकों को अपनाना बहुत जरूरी है ताकि पौधरोपण क्षेत्र में रोपे गए पौधों की सफलता सुनिश्चित की जा सके। डॉ. शर्मा ने जीवामृत, संतुलित मिट्टी, हरित कचरे से खाद के निर्माण पर भी जानकारी सांझा की और इनके नर्सरी तथा पौध रोपण में महत्वता पर भी प्रकाश डाला। सही वैज्ञानिक तकनीक अपनाना और सही समय पर पौध रोपण करना अतिआवश्यक है ताकि पौधरोपण की सफलता और बढ़ने की क्षमता सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने कहा कि पीपल, बरगद जैसे पेड़ों का महत्व हमारे देश मे प्राचीन काल से है और यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हुआ है कि पीपल रात-दिन ऑक्सिजन देता है। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के अनुसार एक पेड़ पूरी उम्र में लगभग 40 लाख रूपए तक की ऑक्सिजन देता है।

डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक 'ई' ने **पारिस्थितिक पुन्रस्थापन (ईको रिस्टोरेशन) में माइकोराईजा की भूमिका'** पर प्रस्तुति के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि माइकोराईजा से पौध रोपण में उत्तरजीविता तथा पौधों के बढ़ने कि क्षमता मे वृद्धि होती हैं। डॉ. तपवाल ने बताया कि संस्थान ने अनुसंधान से यह पाया की माइकोराईजा का उपयोग शंकुधारी वृक्षों की नर्सरी उगाने हेतु बहुत लाभदायक होता है क्योंकि इसके उपयोग से पौधों में काफी जड़ें आती है जिसके कारण पौधे अधिक पोषक तत्व अवशोषित करते हैं तथा उत्तरजीविता में बढ़ोतरी होती है। इसलिए नर्सरी उगाने में भी माइकोराईजा का उपयोग किया जाना चाहिए।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान ने तीन ऑनलाइन प्रतियोगिताओं निबंध लेखन, नारा लेखन और पोस्टर मेकिंग का आयोजन भी करवाया गया। जिसमें संस्थान के कर्मचारियों, शोधार्थियों और बाहरी प्रदेश के प्रतिभागियों ने भी बढ़चढ़ कर भाग लिया। निदेशक महोदय ने संस्थान द्वारा ऑनलाइन आयोजित की गयी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों का उत्साह बढ़ाया और विजेताओं के लिए पुरुस्कारों की घोषणा की। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में नेहा शर्मा ने प्रथम, राहुल रॉय (कर्नाटक प्रदेश) ने द्वितीय एवं दीपिका ठाकुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा जूनियर वर्ग में सान्वी चौहान प्रथम, अनुराग कुमार द्वितीय एवं सांराजली चौहान तृतीय स्थान पर रहे। निबंध प्रतियोगिता में कृष्णा कुमारी ने प्रथम, मेघा सोंदूर (कर्नाटक प्रदेश) ने द्वितीय एवं हिमानी कंवर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नारा लेखन प्रतियोगिता में कृष्णा कुमारी ने प्रथम, पंकज कुमार ने द्वितीय एवं डॉ॰ रिचा ठाकुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम के आयोजन में विस्तार प्रभाग के प्रमुख **श्री जगदीश सिंह, डॉ॰ जोगिंदर चौहान, श्री कुलवंत राय गुलशन, श्री राजेंदर पाल एवं श्रीमती सपना ठाकुर** ने प्रमुख भूमिका निभाई। संस्थान के निदेशक **डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत,** ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सराहना करी तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में **डॉ. जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी** (विस्तार प्रभाग) ने मुख्य वक्ता, प्रतिभागियों, संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधार्थियों का इस आयोजन हेतु अपना बहुमूल्य समय निकाल अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया।

****

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

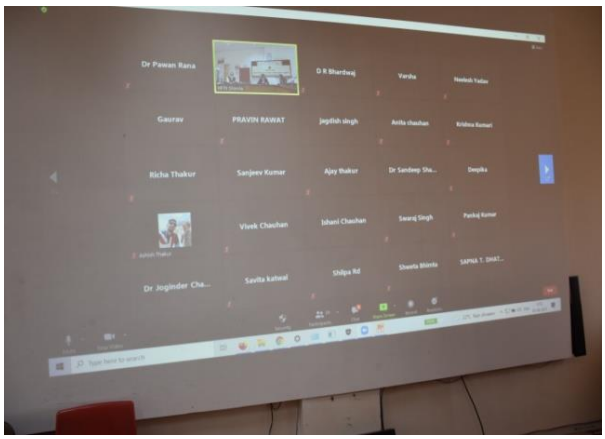

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरण की झलक

दैनिक भास्कर
हिमाचल 07-06-2021

निबंध लेखन में कृष्णा कुमारी को पहला स्थान

सिटी रिपोर्टर | शिमला

एचएफआरआई शिमला में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इसमें संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, संस्थान के शोध केंद्रों में तैनात कर्मचारियों और शोधार्थियों, विश्वविद्यालयों एवं शोधार्थियों, के प्राध्यापकों सहित लगभग 60 लोगों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए वैज्ञानिक 'एफ' एवं प्रभागाध्यक्ष जगदीश सिंह ने संस्थान के निदेशक, आमंत्रित अतिथि नौणी यूनिवर्सिटी से प्रो. डीआर समेत सभी वक्ताओं स्वागत किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. एसएस सामंत पर्यावरण के बिना मानव का अस्तित्व असंभव है। उन्होंने जैव-विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं और जलवायु परिवर्तन' पर अपनी प्रस्तुति दी। एचएफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने 'बेहतर उत्तरजीविता और उत्पादकता वृद्धी के लिए वृक्षारोपण की तकनीकों' पर प्रस्तुति दी।

वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी तपवाल ने ईको रिस्टोरेशन में माइकोराईजा की भूमिका' पर प्रस्तुति के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की।

संस्थान ने विश्व पर्यावरण दिवस पर तीन ऑनलाइन प्रतियोगिताओं निबंध लेखन, नारा लेखन और पोस्टर मेकिंग का आयोजन भी करवाया। इसमें पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में नेहा शर्मा ने प्रथम, राहुल रॉय ने द्वितीय एवं दीपिका ठाकुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि जूनियर वर्ग में सानवी चौहान प्रथम, अनुराग कुमार द्वितीय एवं सांराजली चौहान तृतीय स्थान पर रहे। निबंध लेखन प्रतियोगिता में कृष्णा कुमारी ने प्रथम, मेघा सोंदूर ने द्वितीय एवं हिमानी कंवर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नारा लेखन प्रतियोगिता में कृष्णा कुमारी ने प्रथम, पंकज कुमार ने द्वितीय एवं डॉ. रिचा ठाकुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अंत में मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. जोगिंदर चौहान ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का आभार जताया।